'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 12 04 सितम्बर, 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

(प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न)

'14 दिन में 12 शिविर और लगभग 1800 शिविरार्थी'

सामूहिक यज्ञ (लोड़ता)

जो कार्य एक मनुष्य की शक्ति से बाहर होते हैं, उन्हें पूर्ण करने हेतु मनुष्यों का समूह बनाकर सामूहिक शक्ति का निर्माण आवश्यक है। इस प्रकार का समूह स्वयं में एक व्यवस्था का स्वरूप है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के बीच विविध दायित्वों का वितरण होता है। इन दायित्वों को निभाने हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और आवश्यकता के अनुरूप मापदण्डों पर कसकर योग्य व्यक्तियों को प्रशिक्षण हेतु चुना जाता है। समाज में संस्कार निर्माण का कार्य भी ऐसा ही एक गुरुत्तर कार्य है, जिसे करने में श्री क्षत्रिय युवक संघ संलग्न है। इस कार्य को करने हेतु संघ को भी प्रशिक्षित तथा परीक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता है और इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु संघ द्वारा नियमित रूप से देश भर में बड़ी संख्या में प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरों में प्रथम स्तर प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों का है, जिसमें बालकों तथा युवाओं को संघ दर्शन तथा संघ की कार्य प्रणाली का प्राथमिक परिचय प्रदान करने के साथ ही उन्हें उच्चतर प्रशिक्षण के लिए जांचा व तैयार किया जाता है। 12 से 26 अगस्त की अवधि में विभिन्न स्थानों पर ऐसे 12 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुए, जिसमें लगभग 1800 बालकों व युवाओं ने प्रशिक्षण लिया।

महाराष्ट्र में शाहपुर स्थित ओम महादेव गिरि आश्रम वाघेपाडा में 12 से 15 अगस्त तक शिविर का आयोजन हुआ जिसमें मुंबई तथा पुणे प्रांत की शाखाओं के 115 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि चार दिनों की इस तपस्या ने हमारे भीतर जिस प्रभाव को जन्म दिया है, उसे हमें स्थायित्व प्रदान करना है, जिसके लिए इस प्रक्रिया की निरन्तरता आवश्यक है, अतः नियमित रूप से शिविरों में आते रहे। शिविर की व्यवस्था स्वरूपसिंह भाडू कल्ला ने अपने साथियों के साथ संभाली। इसी अवधि में गुजरात के सूरत प्रान्त का शिविर स्वप्न दृष्टि बंग्लोज कॉलोनी में संपन्न हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के संचालन में इस शिविर में सिलवासा व सूरत क्षेत्र के युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। प्रेमसिंह ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समय की मांग को पूरा करने हेतु लोकसंग्रह का कार्य कर रहा है। एक का उद्देश्य सभी का उद्देश्य बन जाए यही सच्चा लोक संग्रह है। हम भी पूज्य श्री तनसिंह जी के उद्देश्य को अपना उद्देश्य बनाकर इस कार्य में सहयोगी बनने आए है। राजस्थान राजपूत समाज के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर प्रेमसिंह रेवाड़ा ने शिविर की व्यवस्था संभाली। सूरत प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा भी शिविर में उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'श्रद्धा एवं कृतज्ञता पूर्वक किया दुर्गा बाबा को नमन!'

जालोर

मध्यकालीन इतिहास के आदर्श क्षत्रिय चरित्र दुर्गादास जी की 381वीं जयंती आंग्ल कैलेण्डर अनुसार 13 अगस्त को एवं भारतीय पंचांग अनुसार श्रावण शुक्ला चतुर्दशी तद्नुसार 25 अगस्त को देश भर में श्रद्धा एवं कृतज्ञता पूर्वक मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन के निकटतम इतिहास पुरुषों में से दुर्गादास जी एक हैं। उनका समाज चरित्र, उनकी शूरवीरता, उनका तेज, उनका धैर्य, उनका जीवन भर का संघर्ष, उनका त्यागमय जीवन एवं उनका ईश्वरीय भाव सभी विशेषताएं उन्हें संघ के शिक्षण के निकटतम चरित्रों में स्थान देते है। संघ अधिकारों की नहीं बल्कि दायित्व की बात करता है और दुर्गाबाबा का पूरा संघर्ष दायित्व निर्वहन के लिए था। संघ एक लक्ष्य 'धर्म की स्थापना' के अतिरिक्त सभी प्रकार के बंधनों को अस्वीकार करता है। दुर्गादास जी ने भी अपने लक्ष्य के अतिरिक्त किसी बंधन को नहीं स्वीकारा। वे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपलब्ध हर वैध साधन के उपयोग को तत्पर रहे और संघ भी इसी का हिमायती है। वे सिपाही थे, सदैव सिपाही बने रहे। सम्पूर्ण संघर्ष के सूत्रधार होने के बावजूद सिपाही बने रहे, नेता होने के बावजूद कभी अपने आप को नेता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया बल्कि जीवन भर सिपाही बने रहे ऐसे विलक्षण सिपाही जो अपने लक्ष्य से भटकाने के लिए दिए जाने वाले राज्य को भी ठुकरा दे, संघ ऐसे ही सिपाही तैयार करने का मार्ग है और इसीलिए संघ दुर्गादास जी को अपने दर्शन के बहुत निकट पाता है। संघ की प्रत्येक शाखा में दुर्गा बाबा की जयंती सांघिक पर्व के रूप में मनाई जाती है। प्रत्येक स्वयंसेवक उनको श्रद्धांजलि देकर उनसे उनके जैसे सेवा भाव का आशीर्वाद मांगता है। प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी 13 अगस्त एवं श्रावण शुक्ल चतुर्दशी दोनों ही दिन विभिन्न शाखाओं में दुर्गादास जी की जयंती मनाई गई। अनेक शाखाओं ने पूर्णिमा को रक्षाबंधन एवं दुर्गादास जयंती दोनों पर्वों को साथ मनाया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्मान समारोह हेतु आवेदन आमंत्रित

श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान प्रतिवर्ष 10वीं, 12वीं, ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन, आर.पी.एस.सी., यू.पी.ए.सी., नेशनल लेवल स्पोर्ट्स एवं अन्य समानांतर में अव्वल आने वाली क्षत्रिय प्रतिभाओं को सम्मानित करता है। अब तक संस्थान द्वारा 19 प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किए जा चुके हैं। इस बार के सम्मान समारोह के लिए 30 नवम्बर तक आवेदन आमंत्रित किए गए है। संस्थान की स्थापना 15 अगस्त 1999 को की गई तब से लगातार समाज की प्रतिभाओं को खोज कर उनके विकास में सहयोग प्रदान कर रहा है। इसके लिए कोचिंग, होस्टल सुविधा, काउंसलिंग आदि की सुविधा है। संस्थान समाज के लोगों से अपेक्षा करता है कि वे प्रतिभा खोजने एवं उसे संवारने में संस्थान का सहयोग करावें। अधिक जानकारी के लिए www.kshatriyapratibha.netact.in पर विजिट करें।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

जो व्यक्ति अपने जीवन का महत्त्व जानता है वह उसके प्रति संजीदा होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन के हर पड़ाव व हर स्थिति का महत्त्व समझता है एवं तद्नुकूल आचरण करता है। उस व्यक्ति का स्वयं को संजीदगी से दिया गया उत्तरदायित्व पूर्ण महत्त्व उसमें स्वाभिमान जागृत करता है। लेकिन यही महत्त्व यदि कर्तव्य के दृष्टिकोण से नहीं दिया गया हो तो अहंकार बन जाता है। अभिमान बन जाता है। अभिमान और स्वाभिमान के बीच की रेखा बहुत पतली होती है। जो लोग इस पतली सी रेखा के प्रति सावधान नहीं होते वे अपने अहंकार के पोषण को ही स्वाभिमान मानने की भूल कर बैठते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो स्वाभिमान तो दूर अपने अस्तित्व के प्रति ही संजीदा नहीं होते और ऐसे लोगों के अस्तित्व का कोई मान सम्मान नहीं होता। लेकिन यदि आप किसी समूह के प्रतिनिधि बन गए हैं तो आपके अस्तित्व का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। ऐसे में आपको स्वयं के ही नहीं बल्कि उन सभी लोगों के स्वाभिमान का भी सम्मान करना पड़ता है जिनके प्रतिनिधि के रूप में आप चुने गए हैं। यदि आप एक जनप्रतिनिधि के रूप में अपने आपका सम्मान करते हैं तो यह आपका ही सम्मान नहीं है बल्कि उस जन समुदाय का सम्मान है जिसने आपको मत देकर अपना प्रतिनिधि बनाया है। आजकल के जनप्रतिनिधि जब अपने आकाओं के सामने अपने आपको बिछाते देखे जाते हैं तब विचार कीजिए उस स्वाभिमानी व्यक्ति पर क्या गुजरती होगी जिसने मत देकर उसे अपना प्रतिनिधि बनाया है। पूज्य तनसिंह जी दो बार विधायक एवं दो बार सांसद रहे। उन्होंने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि मुझे मेरे क्षेत्र की जनता ने अपना प्रतिनिधि बनाकर राज्य एवं देश की सबसे बड़ी पंचायत का सदस्य बनाया है ऐसे में उनके प्रतिनिधि के रूप में मुझे ऐसा कोई काम नहीं करना है जिससे उनके स्वाभिमान को जरा भी ठेस पहुंचे। अनेक छोटे बड़े अवसरों पर वे इस बात का सदैव ध्यान रखा करते थे। 1977 में छठी लोकसभा के सदस्य के रूप में उनके जीवन की एक छोटी सी घटना यहां प्रस्तुत है। इस लोकसभा में अब तक सत्ता में रही कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई एवं शेष सभी दलों की संयुक्त सरकार बनी जिसमें मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री बनाया गया। मोरारजी मंत्रिमंडल में जयपुर के सांसद सतीशचन्द्र अग्रवाल व कोटा से सांसद कृष्ण कुमार गोयल को मंत्री बनाया गया। मंत्रिमंडल की शपथ ग्रहण के पश्चात् सतीशचन्द्र अग्रवाल ने अपने घर पर सांसदों के सम्मान में एक भोज रखा। पूज्य तनसिंह जी के साथ सदैव रहने वाले सांसद उनके आवास 225 नार्थ एवेन्यू में एकत्र थे। चित्तौड़ से सांसद सेठ श्याम सुन्दर सोमानी भी वहीं थे। वे इस भोज को लेकर बहुत उत्साहित थे एवं बार-बार सभी से सतीशचन्द्र अग्रवाल के यहां आयोजित भोज में शामिल होने का आग्रह कर रहे थे। जबकि अभी तक वहां उपस्थित सांसदों में से किसी के पास भोज का औपचारिक निमंत्रण नहीं आया था। सोमानी जी ने पूज्य श्री को संबोधित करते हुए कहा कि ठाकुर साहब चलो। पूज्य श्री कुछ बोले नहीं। दो-तीन बार आग्रह करने पर उन्होंने सोमानी जी से पूछा कि क्या आप सतीश जी के भाई हो? सोमानी जी कुछ बोले नहीं तो फिर पूछा 'क्या आप उनके नाई हो।' सोमानी जी सकुचाते हुए बोले 'नहीं।' तब तनसिंह जी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि सतीशजी हमारे राजस्थान से सांसद हैं ऐसे में उनके मंत्री बनने पर हम सबको प्रसन्नता है और हम सभी उनके यहां भोज में चलेंगे भी लेकिन औपचारिक निमंत्रण तो आने दीजिए। हम सब हमारे क्षेत्र की जनता के प्रतिनिध है, उनका स्वाभिमान सांसद के रूप में हमारे हर कृत्य के साथ जुड़ा है ऐसे में हमें एक सांसद के रूप में अपने स्वाभिमान के प्रति जागरुक रहना चाहिए। यह थी पूज्य श्री की जागरुकता। इसी जागरुकता के कारण उनके जीवन की हर छोटी-छोटी घटना हमारे जीवन के लिए प्रेरणा बन गई है। काश हमारे आज के जनप्रतिनिधि जो अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए अपने नेताओं के आगे लमलेट होकर स्वयं के साथ-साथ अपने क्षेत्र की जनता के स्वाभिमान को भी आहत करते हैं वे इस घटना से कुछ सीख ले पाते।

जीवनोपयोगी जानकारी-11

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

जीव विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध कॅरियर विकल्पों पर चर्चा के क्रम में हम अब उन क्षेत्रों की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे, जिनमें इस विषय वर्ग के विद्यार्थियों हेतु कॅरियर निर्माण के विशेष अवसर उपलब्ध हैं।

(1) फार्मेसी (Pharmacy) : यह औषधि निर्माण, शोध एवं वितरण में प्रयुक्त विज्ञान व तकनीक का क्षेत्र है। इसके अंतर्गत फार्मासिस्ट के रूप में फार्मेसी शॉप, डिस्पेन्सरी, दवा कंपनियों आदि में कॅरियर बनाया जा सकता है। रसायन-विज्ञान की विशेषज्ञता इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु आवश्यक है अतः जिन छात्रों की रसायन-विज्ञान में विशेष रूचि है उनके लिए यह क्षेत्र उपयुक्त है। इसके अन्तर्गत तीन प्रकार के कोर्स किए जा सकते हैं :

(i) डिप्लोमा इन फार्मेसी (D. Pharma) : यह दो वर्षीय डिप्लोमा है, जिसके बाद 3 महीने की इन्टर्नशिप भी शामिल है। इस डिप्लोमा के बाद विद्यार्थी फार्मेसी शॉप में फार्मासिस्ट के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही स्वयं की फार्मेसी शॉप भी खोल सकते है। साथ ही डिप्लोमाधारी छात्र बी.फार्मा के द्वितीय वर्ष में सीधे प्रवेश पाने के लिए योग्य हैं।

(ii) बैचलर ऑफ फार्मेसी (B. Pharma) : यह चार वर्षीय स्नातक कोर्स है, जिसके पश्चात् विद्यार्थी के लिए सरकारी तथा निजी क्षेत्र में कॅरियर निर्माण के अवसर उपलब्ध है। फार्मेसी में प्रवेश से पूर्व यह अवश्य देखें कि जिस कॉलेज में प्रवेश ले रहे है, वह फार्मेसी काउन्सिल ऑफ इंडिया (PCI) तथा ऑल इण्डिया काउन्सिल फॉर टैक्निकल एजुकेशन (AICTE) द्वारा मान्यता प्राप्त हो।

(iii) डॉक्टर इन फार्मेसी (Pharma D.) : यह डिप्लोमा इन फार्मेसी से भिन्न है। यह भारत सरकार तथा PCI द्वारा वर्ष 2008 से प्रारम्भ 6 वर्षीय पाठ्यक्रम है, जिसमें एक वर्ष की इन्टर्नशिप सम्मिलित है। B. Pharmaडिग्रीधारी छात्र डॉक्टर ऑफ फार्मेसी के चौथे वर्ष में सीधे प्रवेश के लिए पात्र हैं।

उपरोक्त तीनों पाठ्यक्रम अर्थात D. Pharma, B. Pharma & Pharma D में 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् प्रवेश लिया जा सकता है। इनमें प्रवेश हेतु 12वीं कक्षा रसायन विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान विषय के साथ उत्तीर्ण होनी चाहिए अर्थात् जीव-विज्ञान तथा गणित विषय वर्ग, दोनों के छात्र इनमें प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

B. Pharma (बैचलर ऑफ फार्मेसी) के पश्चात् छात्र दो वर्षीय स्नात्तकोत्तर पाठ्यक्रम में भी प्रवेश ले सकते है, जिसे M. Pharma (मास्टर्स इन फार्मेसी) के नाम से जाना जाता है।

उपरोक्त कोर्सेज में प्रवेश हेतु राष्ट्रीय, राज्य तथा संस्थान स्तर पर प्रवेश परीक्षाएं आयोजित होती हैं, जिनमें प्राप्त रैंक के अनुसार फार्मेसी संस्थानों में प्रवेश प्राप्त होता है M.pharma में प्रवेश हेतु AICTE द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर Graduate Pharmacy Aptitude Test (GPAT) नामक प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है। यह 3 घंटे की अवधि में कम्प्यूटर-बेस्ड परीक्षा है जो प्रतिवर्ष आयोजित होती है। देश में फार्मेसी कोर्सेज उपलब्ध करवाने हेतु अनेकों संस्थान है, जिनमें से कुछ मुख्य संस्थानों की सूची यहां प्रस्तुत है -

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

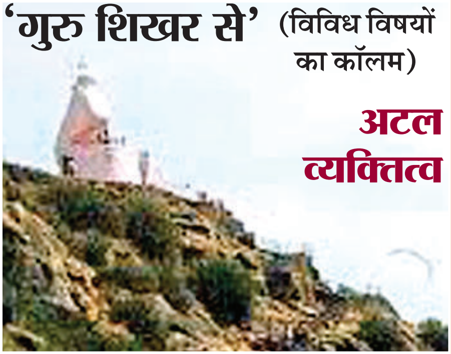

अटल व्यक्तित्व

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

अटल बिहारी वाजपेयी भारत के पहले गैर कांग्रेसी विचारधारा के प्रधानमंत्री बने थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रह चुके थे एवं अविवाहित थे। आठ बार लोकसभा एवं दो बार राज्यसभा के सदस्य रहे। विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा को हिन्दी भाषा में संबोधित कर खूब ख्याति पाई। तीन बार (13 दिन, 13 महीने एवं पांच साल) भारत के प्रधानमंत्री रहे। जवाहर लाल नेहरू उनकी तारीफ करते थे, इंदिरा गांधी सलाह मशवरा करती थी, पी.वी. नरसिम्हा राव ने उन्हें यू.एन.ओ. में अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा। वे सभी राजनीतिक पार्टियों में सर्वमान्य नेता थे उनके सबसे दोस्ताना सम्बन्ध रहे। उन्होंने संकीर्णता की राजनीति नहीं की। वे जोड़-तोड़ की राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे। उनकी सरकार एक वोट से सदन में हार गई। वे चाहते तो सांसदों की खरीद फरोख्त कर सरकार बचा लेते। वाजपेयी को भाषण देने की कला में महारत थी, लोग उनके भाषणों को सुनने के लिए देर रात तक डटे रहते थे। संसद में उनके उद्बोधन के वक्त कोई आवाज तक नहीं करता था। वे पत्रकार, वकील एवं कवि हृदय व्यक्तित्व थे।

पोकरण का द्वितीय परमाणु परीक्षण एवं कारगिल लड़ाई में उनकी भूमिका उन्हें महान प्रधानमंत्री बनाती है। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजना एवं नदियां जोड़ना उनकी महत्त्वपूर्ण योजनाएं थी। पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री जसवंतसिंह जसोल उनके अभिन्न मित्र रहे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री ठाकुर चन्द्रशेखर एवं क्षत्रिय मराठा क्षत्रप शरद पंवार (महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री) से उनका खूब दोस्ताना रहा। वर्तमान केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथसिंह उनके प्रिय शिष्य रहे हैं। ग्वालियर राजमाता श्रीमती विजयराजे सिंधिया का वे बहुत आदर करते थे। श्रद्धेय तनसिंह जी के साथ वे एक बार राज्यसभा एवं एक बार लोकसभा के सदस्य रहे। भू-स्वामी आंदोलन में अग्रणी रहे जनसंघी नेता ठाकुर मदनसिंह दांता (सीकर), श्री क्षत्रिय युवक संघ को गुजरात ले जाने वाले बापू हरीसिंह गोहील (गढ़ूला-भावनगर) एवं गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह बाघेला से वाजपेयी के घरेलू संबंध रहे। वाजपेयी क्षत्रिय समाज एवं उनके देश हित में त्याग और बलिदान के हमेशा प्रशंसक रहे। अटलजी विदेश मंत्री रहते एक बार अफगानिस्तान गए ओर काबूल से दूर छोटी सी जगत गजनी जाना नहीं भूले क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वहां क्षत्रिय शिरोमणि अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि है, उन्होंने वहां जाकर उन्हें नमन किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक से लगातार)

'14 दिन में 12 शिविर और लगभग 1800 शिविरार्थी'

धोबा (जैसलमेर)

वाघेपाड़ा

सूरत

लोटीवाड़ा (सिरोही)

गुजरात के बनासकांठा प्रांत का शिविर 18 से 20 अगस्त तक सगत माताजी मंदिर, टापासर झझाम में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन अजीतसिंह कुणघेर ने सूरत सिंह वातम, अरविन्द सिंह नारोली आदि के सहयोग से किया। शिविर में ध्रेचाणा, झझाम, बोरू, सोनेथ, चारंडा, वरणोसरी, वातम, रामसन, लिबोणी, रडोसण, मसाली, किलाणा, बलादर, नारोली, धनाणा, पावीसणा, डेल, धुणसोल, थराद, कुणघेर, मोरवाड़ा व सुईगांव आदि 21 गांवों के 121 बालकों ने भाग लिया। जबरसिंह ध्रेचाणा ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के पश्चात 8 गांवों में नई शाखाएं प्रारम्भ करने का निर्णय हुआ, साथ ही संघ की कार्य प्रणाली से अभिभूत आयोजकों ने प्रतिवर्ष मंदिर परिसर में एक शिविर आयोजित करवाने का संकल्प लिया। इसी प्रकार मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद शहर प्रांत का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर वासन गांव में स्थित विद्या मंदिर स्कूल में संपन्न हुआ। 15 से 17 अगस्त तक आयोजित इस शिविर का संचालन दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने किया। शिविर में अहमदाबाद, गांधीनगर, पडुसमा, समौ, खाटा आंबा, लिंबोदरा, मेहसाणा, भेसाना, मेऊ, अंबोड, वडासन, वासन, रामपुरा, उनावा और भावनगर से 170 से अधिक राजपूत बालक सम्मिलित हुए। शिविर की व्यवस्था प्रांत प्रमुख जगतसिंह बलासणा तथा करणसिंह पडुसमा ने वासन के समाजबंधुओं के साथ मिलकर संभाली।

नागौर संभाग के खींवसर मंडल में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर करणू गांव में संपन्न हुआ। 19 से 22 अगस्त तक आयोजित इस शिविर का संचालन नत्थुसिंह छापड़ा ने भगवतसिंह सिंघाणा के मार्गदर्शन में अन्य स्वयंसेवकों के सहयोग से किया। शिविर के स्वागत कार्यक्रम में शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत करते हुए शिविर प्रमुख ने कहा कि हमें ईश्वरीय कृपा से यह अनूठा अवसर मिला है कि हम पूज्य श्री तनसिंह जी की समाज के प्रति, मानवता के प्रति पीड़ा को अनुभव कर सके। इस अवसर पर हमें पूरा लाभ उठाना है और इसीलिए आगामी चार दिनों तक सतर्क व जागृत रहना है। शिविर में करणू, साटिका, भूण्डेल, रिडमलसर, देऊ, बापिणी, बेदू, जाखण, कड़वा, गोगलाव, चावण्डियां, छापड़ा, पांचौड़ी आदि गांवों से राजपूत बालकों ने भाग लिया। शिविर के दौरान एक स्नेहमिलन भी रखा गया, जिसमें गांव के बुजुर्गों से संवाद किया गया। बीकानेर जिले की श्री डुंगरगढ़ तहसील के पुन्दलसर गांव में भी इसी अवधि में शिविर आयोजित हुआ, जिसका संचालन गुलाबसिंह आशापुरा ने किया। शिविर में पुन्दलसर, बेलासर, खोनियासर, किरतासर, मोरखाणा, झंझेऊ, बरजांगसर, लखासर, सेरूणा, डूंगरगढ़, सलासर, गुसांईसर, इन पालसर, जाखासर, नोसरिया, मिगसरिया आदि गांवों के 125 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान 21 अगस्त को स्नेहमिलन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें आसपास के गांवों से समाजबंधु सम्मिलित हुए। शिविर की आयोजन व्यवस्था जेठूसिंह, जयसिंह, राजेन्द्रसिंह, नारायणसिंह, छैलूसिंह, मेघसिंह, किशोरीलाल आदि ने समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से संभाली। 19 से 22 अगस्त की अवधि में ही बाड़मेर संभाग के गुडामालानी प्रांत के नया नगर में भी शिविर संपन्न हुआ। हरिसिंह उण्डखा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में क्षेत्र के 107 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। नेपालसिंह भीखसर ने व्यवस्था में सहयोग किया।

जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत के लोडता गांव में भी 20 से 23 अगस्त तक शिविर संपन्न हुआ, जिसमें लोडता, खिंयासरिया, बेलवा, बस्तवा, लवारन, सेखाला, पीलवा, एस.के. तला, ओसियां आदि गांवों के साथ हणवन्त छात्रावास तथा पंचवटी छात्रावास के राजपूत युवाओं ने भाग लिया। शिविर प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक ने शिविरार्थियों को क्षत्रिय के गुणों से अवगत कराते हुए कहा कि हमारे पूर्वज इन गुणों के धारक थे परन्तु वर्तमान में हम इन गुणों को खोते जा रहे हैं, यही हमारे पतन का कारण है। श्री क्षत्रिय युवक संघ शाखाओं व शिविरों के माध्यम से इन गुणों को बचाने व विकसित करने का कार्य कर रहा है, जिसमें हम सभी का सक्रिय सहयोग आवश्यक है। हुकुमसिंह, बाघसिंह, धनसिंह, रामसिंह, गोपालसिंह, शंकरसिंह, कालूसिंह लोड़ता ने अन्य ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था संभाली। जैसलमेर जिले में खुहड़ी के पास स्थित गांव धोबा में भी इसी अवधि में एक शिविर संपन्न हुआ, जिसका संचालन भोजराजसिंह तेजमालता ने किया। शिविर में दामोदरा, तेजमालता, बेरसियाला, झिंझनियाली, म्याजलार, शोभ, कनोई, धोबा, जानरा, बरना, खुहड़ी, सिपला, डांगरी, बडोडा गांव, पोछीना, भाडली, लखा, रणधा, जोगीदास का गांव, सलखा, रोहिडी, इन्द्रोई, भिंयाड, खबड़ाला गांवों से तथा जवाहिर राजपूत हॉस्टल व राजपूत छात्रावास बाड़मेर से लगभग 320 युवाओं व बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेससियाला व संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा भी शिविर में उपस्थित रहे। खुमाणसिंह, हरिसिंह, कमलसिंह, मूलसिंह, भारसिंह धोबा ने समस्त ग्रामवासियों के साथ मिलकर शिविर की व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

पाली जिले में रोहिट के पास स्थित गाजणमाता मंदिर के प्रांगण में 20 से 23 अगस्त तक शिविर हुआ। जिसका संचालन केन्द्रीय कार्यकारी रेवन्तसिंह पाटोदा ने प्रांत प्रमुख महोब्बतसिंह धींगाणा के सहयोग से किया। रेवन्तसिंह ने शिविरार्थियों को कौम के गौरवमयी इतिहास की जानकारी दी और कहा कि हमें अपने इतिहास से प्रेरणा लेकर स्वयं में संघर्ष की भावना पैदा करनी होगी। संघर्ष-क्षमता द्वारा ही किसी समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव है। विदाई के पश्चात् शिविरार्थियों को नव चयनित आर.ए.एस. सददरसिंह भाटी ने सिविल सेवा परीक्षाओं की जानकारी दी। शिविर में चोटिला, सिराणा, मणिहारी, चेण्डा, वायद, कुलथाना, ऊमकली, धींगाणा, गादेरी, मोरिया, बिठू व पाली शहर के लगभग 85 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था महान पराक्रम सिंह चोटिला, जितेन्द्रसिंह चोटिला तथा आनन्दसिंह खांभल ने संभाली। इसी अवधि में सिरोही जिले में उम्मेदगढ़-लोटीवाडा स्थित धवाली माता मंदिर के प्रांगण में एक शिविर संपन्न हुआ। जालोर के प्रांत प्रमुख गणपतसिंह भंवराणी के संचालन में आयोजित शिविर में मांडाणी, नारादरा, चांदणा, काणदर, झाड़ोली वीर, लोटीवाड़ा, सिवणा, सतापुरा, बारेवड़ा, चूरा, भेटाला तथा सिरोही शहर के लगभग 85 बालक सम्मिलित हुए। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को समझाया कि वर्तमान में क्षत्रिय की लड़ाई स्वयं से है अर्थात स्वयं के दुर्गुणों से हमें लड़ना है और जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेता है वहीं संसार पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। मानसिंह, सुमेरसिंह व जितुसिंह लोटीवाड़ा ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बाड़मेर के करटिया (सेड़वा) में 23 से 26 अगस्त तक प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। 180 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देते हुए शिविर का संचालन भगवानसिंह दूधवा ने अपने सहयोगियों सहित किया। व्यवस्था का जिम्मा कालूसिंह गंगासरा ने संभाला। चौहटन एवं बाड़मेर के छात्रावासों के अलावा अनेक गांवों के शिविरार्थी शिविर में पहुंचे। करटिया गांव के 35 शिविरार्थी पूरे शिविर में रहे।

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान

अब आपकी सेवा में

आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
- केटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी
- रेटिना
- ग्लूकोमा
- अल्प दृष्टि उपकरण
- भेंगापन
- कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
- कॉर्निया
- बाल नेत्र चिकित्सा
- आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र

सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ

डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य
डॉ. निशिश खतुरिया
डॉ. गर्व बिश्नोई

- शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
- निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

संपादकीय

रावण तो आदर्श नहीं हो सकता?

रावण राक्षसों के शक्तिशाली संगठन का नेता था। उसका संगठन इतना मजबूत था कि न चाहते हुए भी उसके लोग उसकी आज्ञा का पालन करते थे। कुंभकर्ण उसके द्वारा सीता हरण को ठीक नहीं मानता लेकिन फिर भी उसके लिए मरता है। मारीच ताड़का वध के समय भगवान श्रीराम को पहचान चुका था लेकिन फिर भी राक्षसों के संगठन के नाम पर स्वर्ण मृग बनने को तैयार होता है। कालनेमि हनुमानजी के मार्ग की बाधा बनना नहीं चाहता था लेकिन फिर भी संगठित राक्षस शक्ति के नायक रावण के आदेश की अवहेलना नहीं कर पाया। इस प्रकार ऐसे अनेक उदाहरण मिल सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि रावण का संगठन बहुत मजबूत था लेकिन हमने जाना कि इतना मजबूत संगठन बंदर भालुओं के संगठन से मात खा गया। दुर्योधन का संगठन भी कम नहीं था, कहां 7 अक्षोहिणी सेना और कहां 11 अक्षोहिणी। संगठन तो कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि का भी कमजोर नहीं था लेकिन उन सब का क्या हश्र हुआ यह हम जानते हैं।

इसी प्रकार के संगठनों को वर्तमान में देखकर हम भी निराश होते हैं, हीन भावना से ग्रसित होते हैं, तुलना करते हैं और अपने आपको संगठन के मामले में कमजोर पाकर निःश्वास छोड़ते हैं, शिकायत करते हैं। प्रायः सामाजिक बैठकों में येन-केन प्रकारेण अपने संगठन के बल पर अनुचित मांगे मनवाने वाले लोगों की चर्चा कर हम स्वयं को हीन होने का प्रमाण-पत्र देते हैं। परन्तु थोड़ा ठहर कर विचार करें कि क्या संगठन कभी साध्य बन सकता है? जैसा कि हम सुनते आए हैं कि संगठन में शक्ति होती है और इस प्रकार समझ में आता है कि संगठन का हेतु शक्ति होता है। तो शक्ति भी क्या कभी लक्ष्य हो सकती है? जिन लोगों ने शक्ति को लक्ष्य बनाकर उसका संग्रह किया उनकी कहानी पर हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं। अतुलनीय संगठन बनाकर हासिल की गई शक्ति ने उनको कहीं का नहीं छोड़ा। यश और कीर्ति के अपूर्णनीय ह्रास के साथ उनका जीवन समाप्त हुआ। ऐसा इसलिए हुआ कि उन्होंने शक्ति को अपना साध्य बना लिया। येन-केन प्रकारेण अपने संगठन के बल पर शक्ति संग्रह ही उनका लक्ष्य बन गया और वह अलक्षित शक्ति स्वयं उनके ही विनाश का कारण बन गई। शक्ति अलक्षित हुई क्योंकि लक्ष्य के स्थान पर तो उसने स्वयं को बिठा लिया था, वह साधन न बनकर साध्य बन गई और ऐसी पूजित शक्ति ने तमोक्रांत हो विनाश का तांडव किया इसलिए शक्ति अर्जित करना महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि शक्ति क्यों अर्जित की जाए यह महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार संगठन भी लक्ष्य नहीं हो सकता क्योंकि वह तो शक्ति से भी पहला चरण है। संगठन शक्ति का साधन है और शक्ति भी स्वयं साधन ही है ऐसे में संगठन साध्य कैसे हो सकता है? इसीलिए माननीय संघ प्रमुख श्री कई बार कहते हैं कि संगठन कर रहे हो यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि संगठन क्यों कर रहे हो यह महत्वपूर्ण है। यदि संगठन का हेतु मात्र शक्ति अर्जित करना हो तो ऐसा संगठन राम का संगठन नहीं हो सकता बल्कि रावण का संगठन होगा।

ऐसी अलक्षित शक्ति स्वयं के विनाश का कारण बनेगी। भौतिक प्राप्तियों को ही लक्ष्य बनाकर अर्जित की हुई शक्ति एक दिन स्वयं को खाकर राख हो जाती है और ऐसा ही ऐसे संगठनों के साथ होता है। विश्व पटल पर बने आतंकी संगठनों के उदाहरण हमारे सामने है, उनकी सांगठनिक मजबूती को भी लेकर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता। श्रीलंका का संगठन लिट्टे संसार का सर्वाधिक मजबूत संगठन माना जाता था, लेकिन उसका भी क्या हश्र हुआ वह आज हमारे सामने है। अमेरिका जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को आंख दिखाने वाला संगठन अलकायदा आज कहां है? इसलिए संगठन कभी भी लक्ष्य नहीं हो सकता चाहे वह रावण के राक्षसी संगठन जैसा मजबूत ही क्यों न हो, संगठन तो साधन ही रहेगा। यदि हम उसे लक्ष्य बनाने का प्रयास भी करेंगे तो वह प्रकारांतर से साधन ही रहेगा क्यों कि वह साधन ही है। इसलिए हमें हमारे आसपास की कौमों में पनपे ऐसे संगठनों एवं उनके बल पर उन्हें प्राप्त कुछ भौतिक उपलब्धियों के कारण किसी प्रकार की हीन भावना पाले बिना सतत सात्विक संगठन के माध्यम से सतोगुण का प्रसार करना चाहिए। हमारा स्वभाव भी इसी ओर आकृष्ट होता है इसीलिए तो हमारे यहां जिस प्रकार के लोगों को कोई भी संजीदा व्यक्ति गंभीरता से नहीं लेता वैसे लोग उन कोमों में माननीय विधायक और सांसद बन जाते हैं। इसलिए किसी भी प्रकार की हीन भावना पाले बिना यह दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि ना हम कभी सड़क छाप थे, न हैं और न ही बनेंगे। यही हमारे गौरवशाली जीवन की मांग है। जिस गौरव को लेकर हम विशिष्ट हैं, एक विशिष्ट कुल परम्परा एवं संस्कृति के संवाहक बनना चाहते हैं उसके लिए इस मांग को पूरा करना पड़ेगा। सत्वोन्मुख संगठन ही परमेश्वर से योग की ओर बढ़ाता है जो इस सृष्टि का एक मात्र व अंतिम लक्ष्य है। इसलिए आदर्श रावण नहीं राम को बनाएं।

खरी-खरी

'इतिहास : जीवन का श्रेष्ठतम शिक्षक'

सामाजिक कार्यक्रमों में आने वाले तथाकथित प्रगतिवादी लोग जिन्होंने भौतिक रूप से कुछ हासिल कर लिया है या कुछ बन गए हैं वे समाज को प्रायः उलाहना देते हैं कि हम इतिहास की बातें कब तक करते रहेंगे। हमें इतिहास में नहीं बल्कि वर्तमान में जीना चाहिए। निश्चित रूप से हमें इतिहास में नहीं बल्कि वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि इतिहास पूर्वजों का है, उन्होंने अपने वर्तमान को पूरी संजीदगी से अपना महत्त्व समझते हुए जीया और उनका वह जीवन हमारे लिए गौरवशाली इतिहास बन गया लेकिन हमारे जीवन को गौरवशाली बनाने के लिए हमें स्वयं को ही पुरुषार्थ करना पड़ेगा। लेकिन यहां विचारणीय यह है कि क्या हमारे वर्तमान में पुरुषार्थ के लिए यह बात प्रेरणादायी नहीं है कि किस प्रकार दुर्गादासजी ने 17 वर्ष की उम्र से लेकर 80 वर्ष की उम्र तक निरंतर संघर्ष कर अपने कर्तव्य को निभाते हुए एक आदर्श क्षत्रिय का जीवन जीया। क्या हमें इस बात से प्रेरणा नहीं लेनी चाहिए कि किस प्रकार राव चन्द्रसेन ने अपनी स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए जीवन पर्यन्त जंगलों, पहाड़ों एवं खोहों में भटकना स्वीकार किया? क्या हमारे जीवन के विभिन्न मोड़ों पर इस बात से प्रेरणा नहीं लेनी चाहिए कि वह क्या छोटा सा कारण था जिसके कारण शक्तिसिंह को प्रताप जैसे भाई एवं प्रताप को शक्तिसिंह जैसे भाई से दूर होना पड़ा? क्या हमें इस बात को नहीं जानना चाहिए कि वह कौनसा कारण था जिसने जेता कूंपा को शेरशाह से अकेले लड़ने को मजबूर किया? क्या हमें पाबूजी, हड़बूजी, गोगाजी के देवत्व के पीछे की प्रेरणा से अवगत नहीं होना चाहिए? तो कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात से नकार नहीं सकता कि जिस कौम के पास ऐसा प्रेरणादायी इतिहास हो उसे प्रेरणा ढूंढने के लिए कहीं इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए।

लेकिन जो अपने आपमें समझदार होने का भ्रम पाल लेते हैं उनको लगता है कि दुर्गादास, प्रताप, गोगाजी, चन्द्रसेन, कुंवरसिंह छत्रसाल बुंदेला, शिवाजी आदि से क्या प्रेरणा लेनी? प्रेरणा लेनी हो तो यूरोप के किसी पात्र की चर्चा होनी चाहिए, अमेरिका के किसी व्यक्तित्व को ढूंढा जाना चाहिए या अफ्रीकन संघर्ष को देखा जाना चाहिए। किसी भी महापुरुष से प्रेरणा लेने में कोई ऐतराज नहीं है चाहे वह कहीं भी जन्मा हो लेकिन प्रगतिवाद के चक्कर में या स्वयं ने जो कुछ हल्का-फुल्का पा लिया है उसके अहंकार में अपने ही पूर्वजों से मिलने वाली प्रेरणा से मुंह मोड़ लेना समझदारी नहीं बल्कि समझदारी का भ्रम मात्र है। और फिर इतिहास से होने वाले गौरव का अहसास उन लोगों से पूछे जिनको उधारे इतिहास के बल पर अपने प्रेरणा स्रोत ढूंढने पड़ते हैं या जो कभी महाराणा प्रताप को तो कभी रामदेवजी को अपना पूर्वज बताने के लिए नित नए तिकड़म बिठाते हैं। इसलिए इतिहास की बातों को नकारने की अपेक्षा इतिहास के अध्ययन का दृष्टिकोण बदलने की बात की जानी चाहिए। इतिहास में घटित घटनाओं के पीछे की मनोदशा एवं परिणामों पर विचार किया जाना चाहिए और तद्नुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयास करना चाहिए। इतिहास की बातों एवं अध्ययन को हतोत्साहित करने की अपेक्षा इतिहास का विश्लेषण कर हमारे वर्तमान जीवन को दिशा दी जानी चाहिए क्यों कि इतिहास से बड़ा जीवन का शिक्षक कोई नहीं हो सकता। इतिहास अनुभवों का संग्रह है, वह उन घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन है जो हमारे पूर्वजों के जीवन में घटित हो चुकी हैं और हमारे जीवन में कभी न कभी किसी न किसी रूप में घटित होने वाली है। ऐसे में इतिहास की बातें प्रशस्तिगान के लिए नहीं, केवल गर्व करने के लिए नहीं बल्कि जीवन को दिशा देने वाले अनुभवों के संग्रह के रूप में की जानी चाहिए। साथ ही वर्तमान में कुछ न कुछ छोटी-मोटी उपलब्धि हासिल कर अपने आपको इतिहास पुरुषों के समकक्ष मानकर अपने अहंकार को पोषित करने वाले प्रगतिवादी समझदारों से भी निवेदन है कि इतिहास को पढ़ने एवं जानने का दृष्टिकोण बदलें और यदि ऐसा कर लेंगे तो हो सकता है किसी परीक्षा को पास करने लायक सूचनाएं जुटाने में तो इतिहास आपका इतना सहयोगी नहीं बन पाए लेकिन जीवन का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं, उस परीक्षा के लिए स्वयं को तैयार कैसे कर पाएंगे या जो कुछ छोटा-मोटा उपलब्ध किया है उसे श्रेष्ठत्तम रूप से उपयोग कैसे कर पाएंगे इसका मार्ग अवश्य मिल जाएगा। इसलिए आए इतिहास की बातों को नकारे नहीं लेकिन साथ ही उसे टेबल पर बैठकर मूंछों पर ताव देने का साधन भी न बनाए बल्कि उसे जीवन के श्रेष्ठतम शिक्षक के रूप स्वीकार कर अपने जीवन को दिशा देने में प्रवृत्त होवें।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	08.09.2018 से 10.09.2018 तक	**जाडी** तहसील धानेरा (गुजरात)। धानेरा से रेल व बस सेवा।
2.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**गोपणेश्वर महादेव मंदिर डंडाली** (बाड़मेर)। सिणधरी, बालोतरा व बायतु से बसें उपलब्ध।
3.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**मोड़ी माताजी** (म.प्र.)। तहसील-जावद, जिला-नीमच।
4.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**जगदीश उमरी** जिला-भीलवाड़ा, रायपुर व बोराणा से बस उपलब्ध।
5.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**फतहनगर,** चित्तौड़गढ़-उदयपुर मार्ग पर वाया मावली।
6.	प्रा.प्र.शि.	18.09.2018 से 21.09.2018 तक	**दासपां (जालोर)**। भीनमाल व सियावट से बस उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** 9769218714
7.	प्रा.प्र.शि.	18.09.2018 से 21.09.2018 तक	**शिव मंदिर। विरोल** (जालोर)। साचौर से बस। **सम्पर्क सूत्र :** 7976005765
8.	प्रा.प्र.शि.	18.09.2018 से 21.09.2018 तक	**मालगढ़** (आहोर), भाद्राजून से बस। **सम्पर्क सूत्र :** 9828136005
9.	प्रा.प्र.शि.	19.09.2018 से 22.09.2018 तक	**जैसलमेर**।
10.	प्रा.प्र.शि.	19.09.2018 से 22.09.2018 तक	**नोखा गांव**। नोखा शहर से 5 किमी. बीकानेर रोड पर। **सम्पर्क सूत्र :** 9413311885
11.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**रिड़मलसर**। नागौर-फलोदी मार्ग पर चाडी उतरें। वहां खूब साधन हैं। बीकानेर, फलोदी, जोधपुर से सीधी बस। **सम्पर्क सूत्र :** 8003407777
12.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**जेवलियावास (नागौर)**। डीडवाना से बस। सम्पर्क : मंगेजसिंह : 9829842658
13.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**जालनियासर (नागौर)**। नागौर से सीधी बस।
14.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**लापोड़िया** (जयपुर)। दूदू से हरसोली, हरसोली से 3 किमी दूर लापोड़िया।
15.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**नाथूसर (सीकार)**। रींगस से अजीतगढ़ रोड पर।
16.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**सूरजपुरा रोड,** जाली फार्म, दौसा।
17.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**कोटी खेड़ी (अलवर)**। बहरोड से अटेली मण्डी मार्ग पर।
18.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**बाड़मेर**। भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम। गेहूं-विशाला रोड पर।
19.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**नानण (जोधपुर।**। पीपाड़-बोरूंदा मार्ग पर।
20.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**आसरलाई (जोधपुर)**। देचू से टैक्सी।
21.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**कबरई (उ.प्र.)**। रेलमार्ग से महोबा, वहां से बस द्वारा कबरई।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**चरखारी (उ.प्र.)**। महोबा से चरखारी किला। ऑटो या बस द्वारा।
23.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**धामड़ोज** (गुड़गांव)

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राजपूत अधिवक्ताओं की बैठक संपन्न

राजस्थान उच्च न्यायालय के राजपूत अधिवक्ताओं की बैठक 23 अगस्त को मारवाड़ राजपूत सभा भवन में संपन्न हुई। बैठक को चैनसिंह बैठवास, नरपतसिंह शेखासर, दौलतसिंह निंबला, हनुवंतसिंह अलावा, गोवर्धनसिंह नावद, लालसिंह जाखणिया, शंभुसिंह दुजाणा, देवेन्द्रसिंह महलाणा, सुरेन्द्रसिंह गागूड़ा, भंवरसिंह जाखण आदि अधिवक्ताओं ने संबोधित किया। संचालन प्रहलादसिंह चामू ने किया। बैठक में राजपूत अधिवक्ताओं की डायरेक्टरी छपवाने के कार्य की प्रगति पर बात हुई। नए अधिवक्ताओं को होने वाली प्रारंभिक कठिनाइयों को लेकर चर्चा हुई। उन्हें आवश्यक सहायता उपलब्ध करवाने को लेकर बात हुई। माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में पूर्व में हुई बैठकों में हुए निर्णय को लेकर भी चर्चा की गई।

त्रैमासिक बैठक संपन्न

संघ के मेवाड़, वागड़, चित्तौड़ एवं मालवा संभाग की दो दिवसीय त्रैमासिक बैठक 22 व 23 अगस्त को चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर में संपन्न हुई। बैठक में डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़ आदि प्रांतों से 25 दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित हुए। बैठक में विगत तीन माह में हुए शिविरों, शाखाओं, संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता सहित अन्य सभी कार्यक्रमों की समीक्षा की गई एवं आगामी तीन माह के कार्यक्रमों को लेकर दायित्व दिए गए। सम्पर्क यात्राओं एवं शिविरों को लेकर उत्तरदायित्व विभाजन किया गया।

छात्रावास में कक्ष का लोकार्पण

श्री करणी छात्रावास सरदारशहर में 1 अगस्त को स्थानीय विधायक भंवरलाल शर्मा के विधायक कोष से निर्मित कक्ष का उद्घाटन विधायक शर्मा द्वारा किया गया। छात्रावास समिति द्वारा श्री शर्मा का स्वागत किया गया। श्री शर्मा ने एक और कक्ष बनवाने की घोषणा की। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अमरपुरा महंत सुरेन्द्रसिंह ने छात्रावास में एक कक्ष बनाने एवं छात्रावास में रहने वाले छात्रों में से 90 या 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले छात्र की पढ़ाई का सम्पूर्ण खर्चा उठाने की घोषणा की। अनेक भामाशाहों द्वारा सहयोग राशि की घोषणा की गई। कानसिंह बोघेरा ने एक लाख रुपए का चैक भेंट किया। भीखमसिंह पूर्व प्रधान द्वारा भी एक लाख रुपए भेंट किए गए। समारोह को संबोधित करते हुए अमरपुरा महंत सुरेन्द्रसिंह ने शिक्षा के साथ श्रेष्ठ संस्कारों की आवश्यकता पर बल दिया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

(पृष्ठ एक से लगातार)

‘श्रद्धा एवं कृतज्ञता पूर्वक किया दुर्गा बाबा को नमन!’

दुर्गा महिला विकास संस्थान (सीकर)

संघशक्ति (जयपुर)

संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में 26 अगस्त को प्रातः रविवारीय शाखा में जयपुर शहर के स्वयंसेवकों ने माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में दुर्गादास जयंती एवं रक्षा बंधन का पर्व मनाया। सभी स्वयंसेवकों ने दुर्गाबाबा के जीवन से मिली प्रेरणा को अपने शब्दों में बयां किया। जालोर प्रांत का कार्यक्रम जालोर स्थित मलकेश्वर मठ में रखा गया जिसमें सभी समाजों के गणमान्य लोगों ने श्रद्धापूर्वक दुर्गाबाबा को पुष्पांजलि अर्पित की। भगवान कृष्ण द्वारा गीता के अठारहवें अध्याय के 43वें श्लोक में बताए गए क्षत्रिय के गुणों के दुर्गादास जी किस प्रकार प्रतिमूर्ति थे, यह विस्तार से बताया गया। शिव विधायक मानवेन्द्रसिंह जसोल, जालोर जिला प्रमुख बन्नेसिंह गोहिल, कांग्रेस जिलाध्यक्ष समरजीतसिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष रविन्द्रसिंह बालावत, आहोर प्रधान राजेश्वरी कंवर, उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, उद्यमी मदनराज बोहरा, कांग्रेस नेता सवाराम चौधरी, कर्मचारी नेता ईश्वरलाल शर्मा, पूर्व मंत्री जोगेश्वर गर्ग, पदमाराम चौधरी आदि ने शाब्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

दुर्गादास जी ने अपनी देह क्षिप्रा के तट पर उज्जैन में त्यागी थी जहां उनकी एक छत्री बनी हुई है। विगत वर्षों में वहां संघ की पहल पर जयंती मनानी प्रारम्भ हुई। उज्जैन के पूर्व जिला प्रमुख कान्हसिंह असावता इस श्रृंखला को बनाए हुए हैं एवं प्रतिवर्ष जयंती मनाते हैं। राजस्थान से हर वर्ष कोई न कोई संघ के प्रतिनिधि के रूप में दुर्गाबाबा की छतरी पर श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचता है। इस बार केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ उज्जैन पहुंचे एवं उनके निर्वाण स्थल पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कान्हसिंह असावता ने आज के दिन का महत्त्व बताया वहीं गजेन्द्रसिंह आऊ ने दुर्गाबाबा के जीवन एवं संघ बाबत अपनी बात कही। बाड़मेर की मल्लीनाथ छात्रावास शाखा में बाड़मेर शहर की अन्य शाखाएं एवं स्वयंसेवक शामिल हुए। भगतसिंह जसई एवं कमलसिंह गेहूं ने शाब्दिक श्रद्धांजलि दी वहीं छगनसिंह लुणु ने ‘क्षिप्रा के तीर’ निबंध का वाचन किया। बालोतरा की वीर दुर्गादास छात्रावास शाखा में जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख राणासिंह टापरा, चंदनसिंह चांदेसरा, चंदनसिंह थोब, घनश्यामसिंह शेखावत, हुकमसिंह अजीत, कानसिंह अजीत आदि ने दुर्गाबाबा के जीवन से सीख लेने का आह्वान किया। उदयपुर के एकलिंगपुरा स्थित दवाणा हाउस में जयंती मनाई गई जिसमें मोहनसिंह बंबोरा, महिपालसिंह चिंडालिया, एम.के. जैन, एस.के. गुप्ता, भंवरसिंह बेमला आदि ने अपनी बात कही। जयपुर के कालवाड़ रोड स्थित प्रज्ञा पेराडाईज में जयंती मनाई गई जिसमें गजेन्द्रसिंह सांभरा सुमेरसिंह मंडा, योगेन्द्रसिंह रणसीगांव, प्रवीणसिंह उबासी आदि ने विचार व्यक्त किए। मुंबई की विभिन्न शाखाओं में शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई। मुख्य शाखा मुंबई का कार्यक्रम चौपाटी पर रखा गया। इसके अतिरिक्त मलाड, भायंदर, कल्याण आदि शाखाओं में जयंती मनाई गई। सभी जगह दुर्गादास जी के समाज चरित्र को जीवन में उतारने का आह्वान किया गया। गुजरात के गोहिलवाड़ प्रांत में भावनगर शहर का कार्यक्रम राजपूत बोर्डिंग एवं मोरचंद प्रांत का कार्यक्रम महादेव मंदिर मोरचंद में हुआ। दोनों स्थानों पर संघ के स्वयंसेवकों के साथ-साथ समाज के गणमान्य लोग उपस्थित हुए। जयंती के बाद यज्ञोपवीत संस्कार का कार्यक्रम रखा गया।

मुंबई

जोधपुर शहर की हनुंवत राजपूत शाखा में 12 अगस्त को दुर्गादास जयंती का कार्यक्रम रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने दुर्गादास जी के चरित्र पर प्रकाश डाला। कर्नल नारायणसिंह बेलवा, सोभागसिंह चांदसमा, मोतीसिंह फलसूंड आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जोधपुर शहर की अर्जुन शाखा एवं चन्द्रसेन शाखा का सामूहिक कार्यक्रम नांदड़ी में रखा गया जिसमें मानवेन्द्रसिंह केरालिया, महेन्द्रसिंह छायण, हीरसिंह सुल्ताना आदि ने विचार व्यक्त किए। हल्देश्वर के समीप पिपलून की पहाड़ियां दुर्गादास जी का विचरण क्षेत्र रहा है। संघ के बालोतरा संभाग के स्वयंसेवक 13 अगस्त को पिपलून की पहाड़ियों में पहुंचे एवं वहां दुर्गादासजी की जयंती मनाई। संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी, हणवंतसिंह मवड़ी, प्रेमसिंह राणीगांव, पूरणसिंह सिणेर, राणसिंह टापरा आदि ने दुर्गाबाबा को शब्दांजलि अर्पित की। जयंती कार्यक्रम के समापन पश्चात् वीर दुर्गादास छात्रावास शाखा बालोतरा, कल्लारायमलोत शाखा सिवाणा, नारायण शाखा पादरू आदि शाखाओं के स्वयंसेवक पहाड़ियों का भ्रमण करते हुए हल्देश्वर पहुंचे एवं महादेव के दर्शन कर सांघिक संस्कारों को आत्मसात करने का आशीर्वाद मांगा। जैसलमेर के राजगढ़ की सीनियर स्कूल में भी दुर्गादास जयंती मनाई गई। जैसलमेर की राजमथाई शाखा में भी सांघिक परम्परानुसार जयंती मनाई गई। सीकर के कल्याण राजपूत छात्रावास में जयंती का कार्यक्रम रखा गया जिसमें महावीरसिंह रुंवा, सज्जनसिंह चिड़ासरा, तेजसिंह तिलनोस आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन प्रांत प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर ने किया। जैसलमेर के तेजमालता में वीर दुर्गादास शाखा मैदान में शाखा के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। नागौर की छापड़ा शाखा में स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। श्यामसिंह छापड़ा, युवराजसिंह छापड़ा, मंजीतसिंह छापड़ा, रविन्द्रसिंह छापड़ा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। जोधपुर संभाग की बेदू व रुदिया शाखा में जयंती मनाई गई। उदयपुर संभाग की बी.एन. परिसर शाखा में संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला की उपस्थिति में जयंती मनाई गई। डीडवाना में राजपूत समाज ने राज्यसभा सदस्य संजयसिंह के मुख्य आतिथ्य में जयंती मनाई। राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर 50 से अधिक प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। बीकानेर के दुर्गादास सर्किल पर क्षत्रिय सभा बीकानेर के तत्वावधान में बीकानेर के नागरिकों ने जयंती मनाई। संघ की प्रेरणा से संचालित बालिका छात्रावास दुर्गा महिला विकास संस्थान में संस्थान के संस्थापक सदस्य रतनसिंह नंगली के सानिध्य में जयंती मनाई गई जिसमें रतनसिंह जी ने क्षात्रधर्म एवं दुर्गादास विषय पर बालिकाओं का मार्गदर्शन किया।

बीकानेर के छतरगढ़ मंडल के आरडी 465 पर जयंती का कार्यक्रम रखा गया। संभाग प्रमुख गुलाबसिंह आशापुरा ने दुर्गादास जी के जीवन वृत पर अपनी बात कही। वीरेन्द्रसिंह सिंघाणा ने क्षिप्रा के तीर निबंध का पठन किया। जोधपुर की मसूरिया पहाड़ी पर स्थित दुर्गादास स्मारक पर वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, मरुगंगा संस्था, लायंस क्लब जोधाणा व नवीन शिशु निकेतन के संयुक्त तत्वावधान में दुर्गाबाबा की अश्वारोही प्रतिमा का पूजन कर जयंती मनाई गई। इस अवसर पर डॉ. विक्रमसिंह गुंदोज एवं डॉ. गजेन्द्रसिंह राजपुरोहित द्वारा संपादित ‘वीर दुर्गादास राठौड़ स्मारिका’ व मोहनलाल गेहलोत लिखित नाटक ‘दुर्गा बाबा’ का लोकार्पण किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों व संस्थाओं का सम्मान किया गया।

जयपुर की वीर दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति झोटवाड़ा स्थित दुर्गादास सर्किल पर ध्वजारोहण कर समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई। राजपूत सभा जयपुर के कार्यालय में अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने दुर्गा बाबा की तस्वीर पर माल्यार्पण कर जयंती मनाई।

जैसलमेर जिले के मूलाणा, दवाड़ा, धायसर व कर्मों की ढाणी में दुर्गादास जयंती एवं रक्षा बंधन पर्व 26 अगस्त को मनाए गए। प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह एवं संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा चारों स्थानों पर पहुंचे। सह प्रांत प्रमुख रतनसिंह बडोड़ागांव ने मूलाना में दुर्गादास जी का जीवन परिचय दिया। संभाग प्रमुख ने सांघिक साधना में दुर्गादास जयंती एवं रक्षाबंधन का महत्त्व बताया। जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला, तारेन्द्रसिंह झिंझनियाली, पूंजराज सिंह देवड़ा आदि ने शाब्दिक श्रद्धांजलि दी। गुजरात की काणेटी शाखा में आयोजित जयंती कार्यक्रम में बटुकसिंह, देवेन्द्रसिंह, अरविन्दसिंह, नवलसिंह एवं दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने दुर्गाबाबा के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। धोलेरा शाखा में भी दुर्गादास जयंती एवं यज्ञोपवित संस्कार का कार्यक्रम रखा गया। जैसलमेर की तेजमालता शाखा में ध्वज एवं एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधकर रक्षा बंधन का पर्व मनाया गया। सूरत में भी सांघिक तरीके से रक्षाबंधन मनाया गया। कार्यक्रम को प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा, प्रभुसिंह पायला, चेनसिंह सिराणा आदि ने संबोधित किया। जोधपुर की तनायन शाखा में भी रक्षा बंधन का पर्व मनाया गया।

मोरचंद (गुजरात)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
24.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास, **डूंगरपुर**।
25.	प्रा.प्र.शि.	20.09.2018 से 23.09.2018 तक	**रूद** तहसील राशमी, चित्तौड़गढ़।
26.	प्रा.प्र.शि.	21.09.2018 से 24.09.2018 तक	**झाक (बाटाडा)**। बाड़मेर से नीम्बला होते हुए मौखव गांव के पास झाक बाटाड़ा। नागणेची माता मंदिर।
27.	प्रा.प्र.शि.	21.09.2018 से 24.09.2018 तक	**सच्चाणा (गुजरात)**। खेतिया नागदेव। साणंद-वीरमगांव रोड पर स्थित।
28.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**रायसर (बीकानेर)**। बीकानेर से डूंगरगढ़ मार्ग पर स्थित।
29.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**बरडाना (जैसलमेर)**। नाचना-रामदेवरा मार्ग पर स्थित।
30.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**कांकराला (बाड़मेर)**। बालोतरा, समदड़ी व कल्याणपुर से बसे उपलब्ध।
31.	प्रा.प्र.शि.	27.09.2018 से 30.09.2018 तक	**लूणावास कलां (जोधपुर)**। जोधपुर दलेखां चक्की से बसें।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

राव रतनाजी जयंती समारोह

झुंझुनूं जिले के सूरजगढ़ क्षेत्र के उरीका गांव में 27सा के राजपूतों ने राव रतनाजी की जयंती मनाई। शेखाजी के पुत्र रतनाजी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें क्षेत्र में समाजवाद का प्रवर्तक बताया गया। समाज के वयोवृद्ध भगवानसिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सामाजिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने एवं कानूनी प्रक्रिया से लड़ाई लड़ने का आह्वान किया। अन्य वक्ताओं ने समाज में फैली कुरीतियों को त्यागने एवं शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही।

प्रतिभा

स्नेहा कंवर : नागौर जिले के बरना गांव निवासी नरेन्द्रसिंह की पुत्री स्नेहा कंवर ने सीबीएसई से दसवीं कक्षा में 92 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। बालिका पूर्व सांसद गोपालसिंह शेखावत की दोहिती है।

भूपेन्द्रसिंह नेट में प्रथम : चूई निवासी किशनसिंह के पुत्र एवं जीवराजसिंह मोहनवाड़ी के दामाद भूपेन्द्रसिंह ने जीआरएफसी (नेट) की परीक्षा में राजस्थानी भाषा विषय में प्रथम स्थान पाया है।

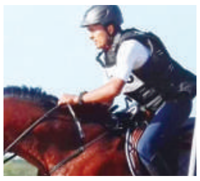

जितेन्द्रसिंह को मिला रजत : इंडोनेशिया में चल रहे एशियाड खेलों में बाड़मेर के मगरा (हरसाणी) गांव के जितेन्द्रसिंह भाटी ने घुड़सवारी के टीम इवेंट में रजत पदक हासिल किया है।

जैसलमेर का 863वां स्थापना दिवस मनाया

जैसलमेर का 863वां स्थापना दिवस 23 अगस्त को मनाया गया। किले की अखै पोळ पर आयोजित कार्यक्रम में जैसलमेर के संस्थापक महारावल जैसल की तस्वीर पर दीप प्रज्वलित कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। इस अवसर पर श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में हिमालय एकेडमी के संचालक तनेसिंह सोढ़ा, सामाजिक कार्य में अग्रणी हड़वंतसिंह डांगरी, राजपूत हॉस्टल के व्यवस्थापक किशनसिंह लोद्रवा, लुनार गांव से 12वीं पास करने वाली प्रथम छात्रा पूजा कंवर, रॉकिंग में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होने वाले दिलीपसिंह सिहडार सहित अनेक लोगों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजकुमारी रत्नावती की वीरता पर नाटक प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में पूर्व महारावल बृजराजसिंह, पूर्व महारानी रासेश्वरी राज्य लक्ष्मी सहित समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर जवाहिर पैलेस होटल में पूर्व राजमाता के सानिध्य में समाज के अग्रणी लोगों की बैठक रखी गई जिसमें पूर्व महारानी रासेश्वरी राज्य लक्ष्मी ने आगामी विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा प्रकट की।

(पृष्ठ दो का शेष)

अटल व्यक्तित्व...

चित्तोड़ की महारानी पद्मिनी पर उन्होंने ओजस्वी कविता लिखी-

भगवा है पद्मिनी के जौहर की ज्वाला,
मिटाती अमावस लुटाती उजाला,
नया एक इतिहास क्या रच न डाला?
चिता एक जलने हजारों खड़ी थी,
पुरुष तो मिटे, नारियां सब हवन की समिधा बन,
ननल के पगों पर चढी थीं
मगर जौहरों में घिरे कोहरे में
धुएं के घनों में कि बलि के क्षणों में,
धधकता रहा पूज्य भगवा हमारा
गगन में लहराता भगवा हमारा।

मुझे भी इस महान नेता के साथ दो दिन का सानिध्य मिला। अटलजी लोकसभा में विपक्ष के नेता रहते समय जून 1992 में माउंट आबू आए थे। मैं उनके साथ राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग के गाइड के रूप में रहा। वे यहां के पर्यटन स्थलों के दर्शन के साथ दुर्गम स्थल वशिष्ठ ऋषि के आश्रम गोमुख गए। जहां साढे सात सौ सीढ़ियों से चलकर नीचे उतरना एवं फिर वापिस ऊपर चढ़ना होता है। वे हंसी मजाक करते हुए कई बार मेरे कंधे के सहारे चले। वहां स्थित आबू के अग्नि कुण्ड के दर्शन किए तथा वहां की दर्शक पुस्तिका में इसका उल्लेख किया। कहने लगे 'वाह रे मत चूके चौहान वंश की उत्पत्ति स्थली।' कुछ इतिहासकार आबू के वशिष्ठ आश्रम के अग्नि कुण्ड से क्षत्रिय वंश की चार राजपूत राजवंशों चौहान, परमार, प्रतिहार एवं सोलंकी की उत्पति मानते हैं। वाजपेयी के हाथों मुझे ऐतिहासिक पोलो ग्राउण्ड के मंच से सम्मानित किया गया। उनके द्वारा प्रदत्त किशनगढ़ की बनीठनी चित्रकला की छह प्रतियां पुरस्कार में दी गई जो मेरे पास उनकी यादों को समेटे आज भी विद्यमान है।

जीवनपयोगी...

1. National Institute of Pharmaceutical Education and Research (NIPER), Mohali (Punjab).
2. Institute of Chemical Technology (ICT), Mumbai.
3. University Institute of Pharmaceutical Sciences, Chandigarh.
4. Manipal Collage of Pharmaceutical Sciences, Manipal.
5. JSS Collage of Pharmacy, Tamilnadu.
6. Goa Collage of Pharmacy, Panji.
7. Puna College of Pharmacy, Pune.
8. KLE College of Pharmacy, Hubli.
9. Bombay Collage of Pharmacy, Mumbai.
10. Amrita School of Pharmacy, Cochi.

क्रमशः

शिविर के लिए सम्पर्क

जैसलमेर के सुल्ताना में 1 सितम्बर से आयोज्य प्रा.प्र.शि. के लिए रामगढ़ प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ ने 26 अगस्त को तेजपाला, बड़ा नगा, नगों की ढाणी, राघवा, रायमला आदि गांवों में युवाओं की बैठकें आयोजित कर सम्पर्क किया एवं शिविर में शामिल होने का आमंत्रण दिया। 1 से 4 सितम्बर लाडनूं के निकट कोयल में होने वाले प्रा.प्र.शि. के लिए 21 अगस्त को कोयल के समाज बंधुओं से सम्पर्क कर एक बैठक रखी गई जिसमें सभी ने शिविर में सहयोग देने का भरोसा दिलाया।

श्यामसिंह चिरनोटिया को पितृ शोक

जीवनसिंह

संघ के स्वयंसेवक श्यामसिंह चिरनोटिया के पिता जीवनसिंह जी का 27 अगस्त को देहावसान हो गया। थानेदार से सेवानिवृत जीवनसिंह जी सेवानिवृत के पश्चात गांव के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहे। वृक्षारोपण करवाया एवं मूक पशु पक्षियों के लिए भोजन, पानी की व्यवस्था करवाई। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोक संतप्त परिवार को सांत्वना के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला

संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में चल रही युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं की शृंखला में 19 अगस्त को सीकर में कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के प्रारम्भ में संघ की कार्य प्रणाली की जानकारी देते हुए प्रकोष्ठों के कार्य के बारे में बताया गया। भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी राजेन्द्रसिंह आंतरी, वरिष्ठ आर.ए.एस. अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब एवं नव चयनित आर.ए.एस. अधिकारी ओमसिंह कारंगा ने सदा की भांति अपना वक्तव्य दिया एवं प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी को लेकर विभिन्न भ्रमों को दूर किया। इसके उपरान्त चले संवाद के सत्र में उपस्थित संभागीयों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया एवं विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे। तीनों अधिकारियों ने अपने अनुभवों के आधार पर सभी प्रश्नों के उत्तर देकर जीवन में बड़ा लक्ष्य रखने के लिए प्रेरित किया। संघ की प्रेरणा से संचालित दुर्गा महिला विकास संस्थान की बालिकाओं की संवाद सत्र में सक्रिय भागीदारी ने सभी को प्रभावित किया। संभागियों ने इस प्रकार के कार्यक्रम बार-बार आयोजित करने की आवश्यकता जताई।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे आदरणीय
अधिकारी एवं
जलदाय विभाग
पोकरण के
कार्यवाहक
अधिशासी
अभियंता

गणपतसिंह अवाय, को सुदूर गांव-ढाणियों तक पेयजल पहुंचाने का उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष में **जिला प्रशासन** द्वारा **सम्मानित** करने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु : महिपालसिंह रावलोत (लोहारकी), गुलाबसिंह चांपावत (गड़ी), दलाराम भील (सांकड़ा), बाबूसिंह जोधा (फलसूंड), नारायणसिंह राठौड़ (लूणा), दावद खां (चिन्नू), अमराराम (जालूवाला), सुमेरसिंह भाटी (सरदारसिंह की ढाणी), पृथ्वीपालसिंह (अवाय), जीवराजसिंह (बडोड़ा गांव), भोपालसिंह (बोडाना), बलवंतसिंह जोधा (फलसूंड)।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे परिवार की होनहार प्रतिभा

सुश्री विश्वमैत्री शेखावत

(सुपौत्री स्व. सवाईसिंह जी खुड़दी)

का असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल) के पद पर चयन होने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु : देवीसिंह खुड़दी, करणसिंह खुड़दी, गुलाबसिंह खुड़दी, रतनसिंह बोबासर, अजीतसिंह बोबासर, राजेन्द्र सिंह बोबासर (दादोसा)।
श्रीमती सरोज कंवर - श्री सुरेन्द्र सिंह (डीडी जेल उदयपुर) (माता-पिता)।
श्रीमती पुष्प कंवर-श्री रामसिंह माडपुरा (भुआसा, फुंफोसा)।
देवेन्द्रसिंह, विरेन्द्रसिंह, विजयसिंह, राघवेन्द्र सिंह (काकोसा)।
सुल्तानसिंह चिंडालिया, आदर्श पब्लिक स्कूल, बीजेएस, जोधपुर (मामोसा)।
विजयसिंह माडपुरा, रूपसिंह माडपुरा, दुर्गादास माडपुरा, ऋत खुड़दी, प्रद्युम्न सिंह चिंडालिया (भाई)।

सौजन्य से : मातेश्वरी मेडिकल स्टोर, बाड़मेर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org